मंत्र · अर्थ · जप जानकारी · निःशुल्क PDF

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः

Vista Hub · vhoriginal.com
साफ टाइप · प्रिंट के लिए तैयार

पूर्ण मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः।

तत्सवितुर्वरेण्यं।

भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्॥

यह वैदिक गायत्री मंत्र का पारंपरिक देवनागरी पाठ है।

शब्दार्थ (सरल हिंदी)

ॐ

परम बीज ध्वनि — सबका मूल

भूः

पृथ्वी लोक

भुवः

अंतरिक्ष / अन्तर लोक

स्वः

स्वर्ग लोक

तत् सवितुः वरेण्यं

उस सविता (सूर्य रूप) देव का वरण करने योग्य तेज

भर्गः देवस्य धीमहि

उस दिव्य प्रकाश का हम ध्यान करें

धियो यो नः प्रचोदयात्

जो हमारी बुद्धि को सही दिशा में प्रेरित करे

संक्षिप्त भावार्थ

हम उस सविता देव के दिव्य तेज का ध्यान करते हैं जो तीनों लोकों में व्याप्त है। वही हमारी बुद्धि को शुद्ध और सही मार्ग की ओर प्रेरित करे।

जप कितनी बार — सामान्य जानकारी

घरों और मंदिरों में अक्सर **१०८** बार जप का उल्लेख मिलता है (माला के पूर्ण चक्र के रूप में)।

कुछ परंपराओं में सुबह **३, ११** या **२१** बार भी जप किया जाता है।

यह केवल लोक-परंपरा की सूचना है — चिकित्सा या फल की गारंटी नहीं। अपनी श्रद्धा और गुरू/परिवार की रीति से करें।

॥ गायत्री मंत्र समाप्त ॥

यह पाठ स्वयं टाइप किया गया है · Vista Hub